सुंदर० १

॥ॐ॥श्रीगणेशाय नमः॥श्रीमते रामानुजाय नमः॥श्लोक॥ शांतं शास्वतमप्रमेयमनघं निर्बाणशांतिप्रदं॥ ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यम
निशं वेदांतवेद्यं विभुं॥ रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिं॥१॥ नान्यास्पृहा रघुपते हृ
दयेस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा॥ भक्तिं प्रयछ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च॥२॥ अतुलितबल
धामं स्वर्णशैलाभदेहं॥ दनुजवनकृसानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं॥ सकलगुननिधानं वानराणामधीसं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमा
मि॥३॥ चौपाया छंद॥ जामवंतके वचन सोहाए॥ सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥ तब लगि मोहि परिषिहु भाइ॥ सहि दुख कंदमूल फल
षाई॥ जब लगि आवउं सीतहि देषी॥ होइ काज मम हृदय विशेषी॥ अस कहि नाइ सबनि कहं माथा॥ चले हरषि हिय धरि रघुनाथा॥
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर॥ कौतुक कूदि चढेउ तिहि ऊपर॥ वार वार रघुवीर संभारी॥ तरकेउ पवनतनय वल भारी॥ जेहि गिरि चरन दी
न्ह हनिवंता॥ चलि सो गये उपताल तुरंता॥ जिमि अमोघ रघुपतिके वाना॥ तेही भांति चले हनुमाना॥ जलनिधि रघुपति दूत विचा
री॥ तै मैनाक होहि श्रम हारी॥ सोरठा॥ सिंधु वचन उर आनि तुरित उठे मैनाक तव॥ कपि कहं कीन्ह प्रनाम पुलकित तन कर जोरि — राम १
करि॥ दो॥ हनूमान तेहि परसा कर तेहि कीन्ह प्रनाम॥ राम काज कीन्है विन मोहि कहा विश्राम॥१॥ चौ॥ जात पवनसुत देवन्ह देषा॥
जानै कहुं वल वुधि विशेषा॥ सुरसा नाम अहि ननि क माता॥ पठइन्ह आइ कहि तिन्ह वाता॥ आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहा

सुंदर२० तनावनै॥ वनवागउपवनवाटिकासरकूपवापीसोहही॥ नरनागसुरगंधर्वकन्यारूपमुनिमनमोहही॥ कहुंमालदेवविसालशैल
२ समानअतिवलगर्जहीं॥ नानाअषानन्हभिरहिवहुविधिएकएकनतर्जही॥ करिजतनभटकोटिन्हविकटतनुनगरचहुदिसिरछ
ही॥ कहिमहिषमानुषधेनुखरगजखलनिसाचरभछही॥ इहिलागितुलसीदासइन्हकीकथाकछुकहोकही॥ रघुवीरसरतीरथ
सरीरन्हत्यागिगतिपैहसही॥ दो॥ पुररषवारोदेषिवहुकपिमनकीन्हविचार॥ अतिलघुरूपधरौंनिसिनगरकरौंपैसार॥३॥ चौ
मसकसमानरूपकपिधरी॥ लंकाचलेसुमिरिनरहरी॥ नामलंकिनिएकनिसिचरी॥ सोकहचलेसिमोहीनिंदरी॥ जानेनाहिमरमस
ठमोरा॥ मोरअहारलंककरचोरा॥ तवकपिमनमहकीन्हविचारा॥ करनचहतियहवहुतप्रकारा॥ मुष्टिकाएकमहाकपिहनी॥ रुधि
रवमनधरनीढनमनी॥ पुनिसंभारिउठीसोलंका॥ जोरिपानिकरिविनयससंका॥ जवरावनहिब्रह्मवरदीन्हा॥ चलतविरंचिकहा
मोहिचीन्हा॥ विकलहोसितैकपिकेमारे॥ तवजानेसुनिसिचरसंघारे॥ तातमोरअतिपुण्यवहूता॥ देषेउंनैनरामकरदूता॥ दो॥ तात राम
स्वर्गअपवर्गसुखधरितूलीएकअंग॥ तुलयनताहिसकलमिलिजोसुखलवसतसंग॥४॥ चौ॥ प्रविसिनगरकीजैसवकाजा॥ २
हृदयराषिकोसलपुरराजा॥ गरलसुधारिपुकारुमिताई॥ गोपदसिंधअनलसितलाई॥ गरुअसुमेरुरेनुसमताही॥ रामकृपाकरि
चितवहिजाही॥ अतिलघुरूपधरेहनुमाना॥ पैठेनगरसुमिरिभगवाना॥ मंदिरमंदिरप्रतिकरिसोधा॥ देषाजहंतहंअगिनितजोधा॥ गए

रा॥ सुनतवचनकहपवनकुमारा॥ रामकाजकैफिरिमैआवौ॥ सीताकैसुधिप्रभुहिसुनावौ॥ तवतववदनपइठिहौंआई॥ सत्यकहौंमो
ज्ञानदेमाई॥ कवनिहुजतनदेइनहिजाना॥ ग्रससिनमोहिकहाहनुमाना॥ जोजनभरितेइंवदनपसारा॥ कपितनुकीन्हदुगुनवि
स्तारा॥ सोरहजोजनमुखतेहिठयऊ॥ तुरितपवनसुतवतीसभयऊ॥ जसजससुरसावदनुवढावा॥ तासुदुगुनकपिरूपदेषावा॥ शतजो
जनतेहिआननकीन्हा॥ अतिलघुरूपपवनसुतलीन्हा॥ वदनपइठिपुनिवाहिरआवा॥ मागिविदाताहिसिरुनावा॥ मोहिसुरन्हजे
हिलागिपठावा॥ बुधिवलमरमतोरमैपावा॥ दो॥ रामकाजसवकरिहहुतुह्मवलवुद्धिनिधान॥ आसिषदेइसुरसागइहरषिचलेह
नुमान॥ २॥ चौ॥ निसिचरिएकसिंधमहुरहई॥ करिमायानभकेषगगहई॥ जीवजेतजतगगनउडाही॥ जलविलोकितिन्हकै
परिछाही॥ गहइछांहसोसकनउडाई॥ एहिविधिसदागगनचरषाई॥ सोइछलहनुमासोकीन्हा॥ तासुकपटकपितुरतहिचीन्हा॥ ताहिमा
रिमारुतसुतवीरा॥ वारिधपारगएमतिधीरा॥ तहाजाइदेषीवनसोभा॥ गुंजतचंचरीकमधलोभा॥ नानातरुफलफूलसोहाए॥ षगमृग
वृंददेषिमनभाए॥ सैलविसालदीषएकआगे॥ तापरकूदिचढेभैत्यागे॥ उमानकछुकपिकिअधिकाई॥ प्रभुप्रतापजोकालेहुषाई
गिरिपरचढिलंकातिहिदेषी॥ कहिनजाइअतिदुर्गविशेषी॥ अतिउतंगजलनिधिचहुंपासा॥ कनककोटकरपरमप्रकासा॥ छं॥ कनक
कोटविचित्रमनिकृतसुंदरायतनाघना॥ गजवाजिखच्चरनिकरपदचररथवरूथनिकोगनै॥ वहुरूपनिसिचरजूथअतिवलसेनवरन

धिकहत रामगुनग्रामा ॥ पावा अनिर्विवाच्य विश्रामा ॥ पुनि सव कथा विभीषन कहही ॥ जेहि विधि जनकसुता जह रहही ॥ तव हनिवंत
कहा सुनु भ्राता ॥ देषन चहौं जानकी माता ॥ जुगुति विभीषण सकल सुनाई ॥ चले पवनसुत विदा कराई ॥ करि सोइ रूप गए उ पुनि तहवा
वन अ सोक सीता रह जहवां ॥ देषि मनहि मन कीन्ह प्रनामा ॥ वैठेहि वीति जाति निसि जामा ॥ कृस तनु सीस जटा एक वेनी ॥ जपति हृ
दय रघुपति गुण श्रेनी ॥ दो० ॥ निज पद नयन दिये मन राम चरन मह्नु लीन ॥ परम दुखित भा पवनसुत देषि जानकी दीन ॥ ८ ॥ चौ०
तरु पल्लव मे रहा लुकाइ ॥ करै विचार करौ का भाइ ॥ तिहि अवसर रावन तह आवा ॥ संग नारि वहु किये वनावा ॥ वहु विधि खल
सीतहि समुझाइ ॥ साम दाम भय भेद देषाई ॥ कह रावन सुनु सुमुखि सयानी ॥ मंदोदरी आदि सव रानी ॥ तव अनुचरी करौं पन
मोरा ॥ एक वार विलोकु मम वोरा ॥ त्रन धरि वोट कहति वैदेही ॥ सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥ सुनु दशमुख खद्योत प्रकाशा ॥ कवहु
कि नलिनि करहि विकासा ॥ अस मन समुझी कहत जानकी ॥ खैसुधि नही रघुवीर वान की सठ सूने हरि आने मोही ॥ अधम निलज्ज ल
लाज नहि तोही ॥ दो० ॥ आपुहि सुनि षद्योत सम रामहि भानु समान ॥ परुष वचन सुनि काढि असि वोला अति षिसिआन ॥ ९ ॥ चौ० ॥ सीता
तै मम कृत अपमाना ॥ कटिहौं तव सिर काढि कृपाना ॥ नाहि त सपदि मानु मम वानी ॥ सुमुखि होत नत जीवन हानी ॥ स्याम सरोज दाम
सम सुंदर ॥ प्रभु भुज करि कर सम दसकंदर ॥ सो भुज कंठ कि तव असि घोरा ॥ सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥ चंद्रहास हरु मम परितापं ॥ रघु

दसाननमंदिरमाही॥ अतिविचित्रकहिजातसोनाही॥ सयनकियेदेषिकपितेही॥ मंदिरमहंनदेषुवैदेही॥ भवनएकपुनिदेषिसुहावा
हरिमंदिरतेभिन्नबनावा॥ दो॥ रामनामअंकितग्रहसोभाबरनिनजाइ॥ नवतुलसीकेबृंदतहंदेषिहर्षकपिराइ॥५॥ चौ॥ लंकानिसिच
रनिकरनिवासा॥ इहांकहांसज्जनकरवासा॥ मनमहुंतरककरैकपिलागा॥ तेहिसमयविभीषणजागा॥ रामरामतेहिसुमिरनकीन्हा
हृदयहरषिकपिसज्जनचीन्हा॥ एहिसनहठिकरिहोंपहिचानी॥ साधुतेहोइनकारजहानी॥ विप्ररूपधरिवचनसुनावा॥ सुनतविभीषन
उठितहंआवा॥ करिप्रनामपूछिकुसलाई॥ विप्रकहहुनिजकथाबुझाई॥ कितुमहरिदासनमहुकोइ॥ मोरेहृदयप्रीतिअतिहोइ॥ कीतुम
रामदीनअनुरागी॥ आएहुमोहिकरनवडभागी॥ दो॥ तवहनवंतकहीसवरामकथानिजनाम॥ सुनतजुगलतनपुलकमनमगनसुमि
रिगुणग्राम॥६॥ चौ॥ सुनहुपवनसुतरहनिहमारी॥ जिमिदसननमहंजीभिविचारी॥ तातकवहिमोहिजानिअनाथा॥ करिहहिकृपाभा
नुकुलनाथा॥ तामसतनकछुसाधननाही॥ प्रीतिनपदसरोजमनमाही॥ अवमोहिभाभरोसहनिवंता॥ विनुहरिकृपामिलहिनहिसं
ता॥ जोरघुवीरअनुग्रहकीन्हा॥ तौतुम्हमोहिदरसहठिदीन्हा॥ सुनहुंविभीषणप्रभुकैरीती॥ करहिंसदासेवकपरप्रीती॥ कहहुकवन
मैपरमकुलीना॥ कपिचंचलसवहीविधिहीना॥ प्रातलेइजोनामहमारा॥ तेहिदिनताहिनमिलैअहारा॥ दो॥ असमैअधमसखासुनुमो
हिउपररघुवीर॥ कीन्हीकृपासुमिरगुनभरेविलोचननीर॥७॥ चौ॥ जानतहुंअसस्वामिविसारी॥ फिरितेकाहेनहोहिदुखारी॥ एहिवि

सुंदर
५

विनयममविटप असोका॥ सत्यनामकरुहरुममसोका॥ नूतनकिसलयमनहुकृसाना॥ देहि अगिनितनकरहिंनिदाना॥ देषिपर
मदिरहाकुलसीता॥ सोछुनकपिहिकलपसमवीता॥ सो॥ कपिकरुहृदयविचारुदीन्हमुंडिकाडारितव॥ जनु असोक अंगारलीन्ह
हहरषिउठिकरगहे ७॥१२॥ चौ॥ तवदेषामुंडिकामनोहर॥ रामनाम अंकित अतिसुंदर॥ चकृतचितवमुंदरिपहिचानी॥ हरषुविषादहृ
दय अकुलानी॥ जीतिकोसकै अजररघुराई॥ मायाते असिरचीनजाई॥ सीतामनविचारुकरुनाना॥ मधुरवचनवोलेहनुमा
ना॥ रामचंद्रगुनवरनैलागा॥ सुनतहिसीताकरदुषभागा॥ लागीसुनैश्रवनमनलाई॥ आदिहितेसवकथासुनाई॥ कहीसोप्र
गटहोहिकिनभाई॥ श्रवनामृतजेहिंकथासुनाई॥ तवहनुमंतनिकटचलिआएउ॥ फिरिवैठीमनविस्मैपाएउ॥ रामदूतमैमातुजानकी
सत्यसपथकरुणानिधानकी॥ यहमुंडिकामातुमैआनी॥ दीन्हिरामतुमकहसहिदानी॥ नरवानरहिसंगुकहुकैसे॥ कहिकथासंग
तिभइजैसे॥ दो॥ कपिकेवचनसप्रेमसुनिउपजामनविस्वास॥ जानामनक्रमवचनयहकृपासिंधुकरदास॥१३॥ चौ॥ हरिजनजा॰ राम
निप्रीतिअतिवाढी॥ सजलनयनरोमावलिवाढी॥ वूडतविरहजलधिहनुमाना॥ भएहुतातमोकहजलजाना॥ अवकहुकुशलजा ५
उंवलिहारी॥ अनुजसहितसुखभवनषरारी॥ कोमलचितकृपालरघुराई॥ कपिकेहिहेतुधरीनिठराई॥ सहसवानसेवकसुखदायक
कवहुकसुरतिकरतरघुनायक॥ कवहुनमनममसीतलजाता॥ होइहहिनिरषिस्यामम्रदुगाता॥ वचनुनआवनयनभरिवारी॥ अ

पतिविरहअनलसंतापं॥सीतलनिसितवअसिवरधीरा॥कहसीताहरुममदुखभीरा॥सुनतवचनपुनिमारनधावा॥मयतनया
कहिनीतिबुझावा॥कहेसिसकलनिसिचरिन्हबोलाइ॥सीतहिबहुविधित्रासहुजाइ॥मासदिवसमहकहानमाना॥तौमैमारबकाढिकृ
पाना॥दो॥भवनगएदशकंधरइहापिसाचिनिबृंद॥सीतहित्रासदेषावहिधरहिरूपबहुमंद॥१०॥चौ॥त्रिजटानामराक्षसिएका॥रा
मचरनरतिनिपुनविवेका॥सबनैबोलिसुनाइससिपना॥सीतहिसेइकरहुहितअपना॥सपनेवानरलंकाजारी॥जातुधानसेना
सबमारी॥खरआरूढनगनदशसीसा॥मुंडितसिरषंडितभुजबीसा॥एहिविधिसोदछिनदिसिजाइ॥लंकामनहुंविभीषनपाई॥
नगरफिरिरघुवीरदोहाइ॥तवप्रभुसीतहिबोलिपठाइ॥यहसपनामैकहौपुकारी॥होइहिसत्यगएदिनचारी॥तासुवचनसुनितेसबडरी॥ज
नकसुताकेचरनन्हपरी॥दो॥जहतहगइसकलतवसीताकरमनसोच॥मासदिवसवीतेमोहिमारिहिनिसिचरपोच॥११॥चौ॥त्रिज
टासनबोलीकरजोरी॥मातुविपतिसंगिनितैमोरी॥तजौदेसकरुवेगिउपाई॥दुसहविरहअवनहिसोहिजाई॥आनुकाठरचुचितावना
इ॥मातुअनलपुनिदेहुलगाइ॥सत्यकरहिममप्रीतिसयानी॥सुनिकैश्रवनसूलसमवानी॥सुनतवचनपदगहिसमुझाएसि॥प्रभुप्रता
पबलसुजससुनाएसि॥निसिनहिअनलमिलैसुकुमारी॥असकहिसोनिजभवनसिधारी॥कहुसीताविधिभाप्रतिकूला॥मिलिहिनपावक
मिटिहिनसूला॥देषियतप्रगटगगनअंगारा॥अवनिनआवतएकौतारा॥पावकमैससिश्रवतनआगी॥मानहुमोहिकेरतहितभागी॥सुनहि

तिवलवीरा॥सीतामननभरोसतवभयऊ॥अतिलघुरूपपवनसुतलयऊ॥दो॥सुनुमातासारवामृगनहिवलबुद्धिविसाल॥प्रभुप्र
तापतेगरुडहिषाइपरमलघुव्याल॥१६॥चौ॥मनसंतोषसुनतकपिवानी॥भगतिप्रतापतेजवलसानी॥आसिषदीन्हरामप्रियजा
ना॥होहुतातवलसीलनिधाना॥अजरअमरगुननिधिसुतहोहू॥करहुतोहिरघुनायकछोहू॥करहुकृपाप्रभुअससुनिकाना
निर्भरप्रेममगनहनुमाना॥वारवारनाएपदसीसा॥वोलावचनजोरिकरकीसा॥अवकृतकृत्यभएउमैमाता॥आसिषतवअमो
घविष्याता॥सुनहुमातुमोहिअतिसयभूषा॥लागीदेषिसुंदरफलरूषा॥सुनुसुतकरहिविपिनिरषवारी॥परमसुभटरजनी
चरधारी॥तिन्हकैभैमातामोहिनाही॥जौतुमसुखमानहुमनमाही॥दो॥देषिवुद्धिवलनिपुनकपिकहेउजानकीजाहु
रघुपतिचरनहृदयेधरितातमधुरफलषाहु॥१७॥चौ॥चलेउनाइसिरपैठेउवागा॥फलषाएसितरुतोरनलागा॥रहेतहावहुभटर
षवारा॥कछुमारेन्हीकछुजाइपुकारा॥नाथएकआवाकपिभारी॥तेहिअशोकवाटिकाउजारी॥षाएसिफलअरुविटपउपारे
राक्षसमर्दिमर्दिमहिडारे॥सुनिरावनपठएउभटनाना॥तिन्हहिदेषिगर्जोहनुमाना॥सवरजनीचरकपिसंहारे॥गएपुकारतकछु
अधमारे॥पुनिपठएउतेहिअछैकुमारा॥चलासंगलैसुभटअपारा॥आवतदेषिविटपगहितर्जा॥ताहिनिपातिमहाधुनिगर्ज्जा॥
दो॥कछुमारेसिकछुमर्देसिकछुलैमेलएदूरि॥कछुपुनिजाइपुकारेसिप्रभुमर्कटवलभूरि॥१८॥चौ॥सुनिसुतवधलंकेशरिसाना॥

हहनाथमोहिनिपटविसारी॥ देषिपरमविरहाकुलसीता॥ वोलेकपिम्रदुवचनविनीता॥ मातुकुशलप्रभुअनुजसमेता॥ तवदुखदुखीसु
कृपानिकेता॥ जनिजननीमानसिजियऊना॥ तुमतेप्रेमरामकहदूना॥ दो॰॥ रघुपतिकरसंदेसअवसुनुजननीधरिधीर॥ असकहिकपि
गदगदभएउभरेविलोचननीर॥ १४॥ चौ॰॥ कहेउरामवियोगतवसीता॥ मोकहसकलभएविपरीता॥ नुतनकृसलयमनहुकृसानू॥ कालनि
सासमनिसिससिभानू॥ कुवलयविपिनिकुंतवनसरिसा॥ वारिधतपततेलजनुवरिसा॥ जेहितररहेकरततेइपीरा॥ उरगस्वाससमत्रिवि
धिसमीरा॥ कहेहूतेकछुदुषघटिनहिहोई॥ काहकहौयहजाननकोई॥ तत्वप्रेमकरुममअरूतोरा॥ जानतप्रियाएकमनमोरा॥ सोमनु
सदारहततोहिपाही॥ जानुप्रीतिरसएतनेहिमाही॥ प्रभुसंदेससुनतवैदेही॥ मगनप्रेमतनसुधिनहितेही॥ कहकपिहृदयधीरधरूमाता
सुमिरुरामसेवकसुखदाता॥ उरआनहुरघुपतिप्रभुताई॥ सुनिममवचनतजहुकदराई॥ दो॰॥ निसिचरनिकरपतंगसमरघुपतिवानु
कृसानु॥ जननिहृदयधीरधरुजरेनिसाचरजानु॥ १५॥ चौ॰॥ जोरघुपतिहोतिसुधिपाई॥ करतेनहिविलंवरघुराइ॥ रामवानरविउदय
जानकी॥ तमवरूथकहजातुधानकी॥ अवहिमातुमेजाउंलवाई॥ प्रभुआयसुनहिरामदोहाई॥ कछुकादिवसजननीधरुधीरा॥
कपिनसहितअेहहिरघुवीरा॥ निसिचरमारितोहिलेजैहही॥ तिहुपुरनारदादिजसुगहही॥ हैसुतकपिसवतुमहिसमाना॥ जातुधान
अतिभटवलवाना॥ मोरेहृदयपरमसंदेहा॥ सुनिकपिप्रगटकीन्हनिजदेहा॥ कनकभूधराकारसरीरा॥ समरभयेकरअ

वलबिरचितुमाया॥जाकेवलविरंचिहरिईसा॥पालतसृजतहरतदशसीसा॥जावलसीसधरतसहसानन॥अंडकोशसमेतगि
रिकानन॥धरैजोविविधदेहसुरत्राता॥तुम्हसेसठनसिषावनदाता॥हरकोदंडकठिनजेहिभंजा॥तेहिसमेतनृपदलमदगंजा॥
खरदूषणत्रिसराअरुवाली॥वधेसकलअतुलितवलसाली॥दो॥जाकेवललवलेसतेजितेहुचराचरझारि॥तासुदूततमैजाक
रहरिआनेहुप्रियनारि॥२१॥चौ॥जानौमैतुम्हारिप्रभुताहि॥सहसवाहुसनपरीलराई॥समरवालिसनकरिजसुपावा॥सुनिक
पिवचनविहसिवहीरावा॥षाएफलप्रभुलागीभूषा॥कपिसुभावतेतोरेउरूषा॥सवकेदेहपरमप्रियस्वामी॥मारहिमोहिकुमारगा
गामी॥जिन्हमोहिमारातेहिमैमारा॥तेहिपुरवाधेउतनयतुम्हारा॥मोहिनकछुवाधेकैलाजा॥कीन्हचहोनिजप्रभुकैकाजा॥विनतीक
रौजोरिकररावन॥सुनहुमानतजिमोरसिषावन॥देषहुतुमनिजकुलहिविचारी॥भ्रमतजिभजहुभगतभयहारी॥जाकेडरअति
कालडराई॥जोसुरअसुरचराचरषाई॥तासोवयरकवहुनहिकीजै॥मोरेकहेजानकीदीजै॥दो॥प्रनतपालरघुनायककरुणासिंधु
षरारि॥गएसरनप्रभुराषिहैतवअपराधविसारि॥२२॥चौ॥रामचरनपंकजउरधरहू॥लंकाअचलराजतुमकरहू॥रिषिपुलस्तिजस
विमलमयंका॥तिहिससिमहुजनिहोहुकलंका॥रामनामविनुगिरानसोहा॥देषुविचारित्यागिमदमोहा॥वसनहीननहिसोहसुना
री॥सवभूषनभूषितवरचारी॥रामविमुखसंपतिप्रभुताई॥जाइरहीपाइविनुपाइ॥सजलमूलजिन्हसरितन्हनाही॥वरषिगएपुनित

पठएसिमेघनादवलवाना॥मारेसुजनिसुतवाधेसुताही॥देषियकपिहिकहाकरआही॥चल्लाइंद्रजीतअतुलितजोधा॥वंधु
वधनसुनिउपजाक्रोधा॥कपिदेषादारुणभटआवा॥कटकटाइगर्जाअरुधावा॥अतिविसालतरुएकउपारा॥विरथकीन्हलं
केशकुमारा॥रहेमहाभटताकेसंगा॥गहिगहिपदमर्दैनिजअंगा॥तिन्हहिनिपातिताहिसनवाजा॥भिरेजुगलमानहुगजराजा॥मु
ष्टिकामारुचढातरुजाई॥ताहिएकछनमरुछाआइ॥उठिवहोकीन्हेसिवहुमाया॥जितिनजाइप्रभंजनजाया॥दो॥ब्रह्मअस्त्र
तेहिसाधाकपिमनकीन्हविचार॥जौनब्रह्मसरमानौमहिमामिटैअपार॥१९॥चौ॥ब्रह्मवानकपिकहुतेहिमारा॥परतिहुवारकटक
संहारा॥तेहिदेषाकपिमुरछितभयउ॥नागफासवाधेसिलेगयउ॥जासुनामजपसुनहुभवानी॥भववंधनकाटहिनरज्ञानी॥ता
सुदूतकीवंधनतरआवा॥प्रभुकारजलगिआपुवधावा॥कपिवंधनसुनिनिसिचरधाए॥कौतुकलागिसभासवआए॥दश
मुखसभादीषकपिजाई॥कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई॥करजोरेसुरदिसिपविनीता॥भृकुटिविलोकतसकलसभीता॥रा
मप्रतापनकपिमनसंका॥जिमिअहिगनमहगरुडअसंका॥दो॥कपिहिविलोकिदशाननविहसिकहिदुर्वाद॥सुतवधसुर
तिकीन्हपुनिउपजाहृदयविषाद॥२०॥चौ॥कहलंकेशकवननैकीसा॥केहिकेवलघालेवनषीसा॥कीधौश्रवनसुनेनहिमो
ही॥देषौअतिअसंकसठतोही॥मारेनिसिचरकेहिअपराधा॥कहुसठतोहिनप्रानकैवाधा॥सुनुरावनब्रह्मांडनिकाया॥पाइजासु

दो॰५

परमहरूआई॥मंदिरतेमंदिरचढिधाई॥जरइनगरभालोगविहाला॥झपटलपटवहुकोटिकराला॥तातमातुहासुनियपुकारा॥
एहिअवसरकोहमहिउवारा॥हमजोकहायहकपिनहिहोई॥वानररूपधरेसुरकोइ॥साधुअवज्ञाकरफलऐसा॥जरइनग
रअनाथकरजैसा॥जारानगरुनिमिषएकमाही॥एकविभीषनकरघरनाही॥ताकरदूतअनलजेहिसिरजा॥जरानसोतेहिका
रनगिरिजा॥उलटिपलटिलंकातेहिजारी॥कूदिपराकपिसिंधुमंझारी॥पछिवुझाइधोइश्रमधरीलघुरूपहोरि॥जनकसुताकेआगे
ठाढभएकरजोरि॥२६॥चौ॥मातुमोहिदीजैकछुचीन्हा॥जैसेरघुनाएकमोहिदीन्हा॥चूडामनिउतारितवदएउ॥हरषसमेतपवसुतलएउ
उ॥कहेहुतातअसमोरप्रनामा॥सवप्रकारप्रभुपूरनकामा॥दीनदयालविरदसंभारी॥हरहुनाथममसंकटभारी॥तातशक्रसुतकथा
सुनाएहु॥वानप्रतापप्रभुहिसमुझाएहु॥मासदिवसमहनाथनआवै॥तौपुनिमोहिजियतनहिपावै॥कहुकपिकेहिविधिराखौप्रा
ना॥तुमहूंतातकहतअवजाना॥तोहिदेषिसीतलभइछाती॥पुनिमोकहसोईदिनराती॥दो॥जनकसुतहिसमुझाइकरिवहुविधिधीरज

दीन्ह चरनकमलसिरुनाइकपिगवनरामपहकीन्ह॥२७॥चौ॥गर्भश्रवहिसुनिनिसिचरनारी॥नाघिसिंधुएहिपारहिआवा॥
सवदकिलिकिलाकपिन्हसुना॥हरषेसवविलोकिहनूमाना॥नूतनजन्मकपिन्हतवजाना॥मुखप्रसन्नतनतेजविराजा॥किन्हेसिरा
मचंद्रकरकाजा॥मिलेसकलअतिभएसुखारी॥तलफतमीनपावजनुवारी॥चलेहरषिरघुनायकपासा॥पूछतकहतनवलइति

वहिसुषाही॥सुनुदसकंठकहौपनरोपी॥विमुखरामत्रातानहिकोपी॥शंकरसहसविष्नुअजतोही॥सवकहिनराषिरामकरद्रोही॥दो॥
मोहमूलवहुसूलप्रदत्यागहुतुमअभिमान॥भजहुरामरघुनायककहिकृपासिंधभगवान॥२३॥चौ॥जदपिकहीकपिअतिहितवा-
नी॥भगतिविवेकविरतिनयसानी॥वोलाविहसिमहाअभिमानी॥मिलाहमहिकपिगुरवडज्ञानी॥मृत्युनिकटआइखलतोही॥लागे
सिअधमसिषावनमोही॥उलटाहोइकहाहनुमाना॥मतिभ्रमतोहिप्रगटमैजाना॥सुनिकपिवचनवहुतषिसियाना॥वेगिनहतहुमूढ
करप्राना॥सुनतनिसाचरमारनधाए॥सचिवन्हसहितविभीषनआए॥नाइसीसकरिविनयवहूता॥नीतिविरोधनमारिएदूता॥आनदं
डकछुकरियगोसांई॥सवहीकहामंत्रभलभाई॥सुनतविहसिवोलादशकंधर॥अंगभंगकरिपठइयवंदर॥दो॥कपिकीममतापूछिपरसवही
कहौंसमुझाइ॥तेलवोरिपटवाधिपनिपावकदेहिलगाइ॥२४॥चौ॥पूछिहीनवानरतहजाईही॥तवसठनिजनाथहिलैआइही॥जिन्हकेकीन्हि-
सिवहुतवडाई॥देषौमैतिन्हकेप्रभुताइ॥वचनसुनतकपिमनमुसुकाना॥भइसहाइसारदमैजाना॥जातुधानसुनिरावनवचना॥लागेरचैमूढ
सोइरचना॥रहाननगरवसनघृततेला॥वाढीपूछकीन्हसववेला॥कौतुककहंआएपुरवासी॥मारहिचरनकरहिवहुहासी॥वाजहिढो
लदेहिसवतारी॥नगरफेरिपुनिपूछिप्रजारी॥पावकजरतदेषिहनिवंता॥भएउपरमलघुरूपतुरंता॥निवुकिचढाकपिकनकअटारी॥भ
इसभीतनिसाचरनारी॥दो॥हरिप्रेरिततेहिअवसरमरुतवोनचास॥अट्टहासकरिगर्जाकपिवढिलागुआकास॥२५॥चौ॥देहविसाल

दीन्ही ॥ रघुपतिहृदयलाइतवलीन्ही ॥ नाथजुगललोचनभरिवारी ॥ वचनकहेउकछुजनककुमारी ॥ अनुजसमेतगहेहुप्रभुचर
ना ॥ दीनवंधप्रनतारतिहरना ॥ मनक्रमवचनचरनअनुरागी ॥ केहिअपराधनाथमोहित्यागी ॥ औगुनएकमोरमैमाना ॥ विछुर
तप्राननकीन्हपयाना ॥ नाथसोनैनन्हकरअपराधा ॥ निसरतप्रानकरहिहठिवाधा ॥ विरहअगिनितनतूलसमीरा ॥ स्वासजरइ
छनमाहसरीरा ॥ नैनस्रवहिजलनिजहितलागी ॥ जरैनपावदेहविरहागी ॥ सीताकैअतिविपतिविसाला ॥ विनहीकहेभलदीन
दयाला ॥ दो॥ निमिषिनिमिषिकरुणाधिजाहिकलपसमवीति ॥ वेगिचलियप्रभुआनियैभुजवलखलदलजीति ॥ ३१ ॥ चौ॥ सुनि
सीतादुखप्रभुसुखअयना ॥ भरिआएराजीवजलनयना ॥ वचनकायमनममगतिजाही ॥ सपनेहुवूझियविपतिकिताही ॥ कहहनुमं
तविपतिप्रभुसोई ॥ जवतवसुमिरनभजननहोई ॥ केतिकवातप्रभुजातुधानकी ॥ रिपुहिजीतिआनविजानकी ॥ सुनुकपितोहि
समाननहितकारी ॥ नहिकोउसुरनरमुनितनुधारी ॥ प्रतिउपकारकरौकातोरा ॥ सनमुखहोइनसकतमनमोरा ॥ सुनुसुततो
हिउरिनमैनाही ॥ देखेउकरिविचारिमनमाही ॥ पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता ॥ लोचननीरपुलकसवगाता ॥ दो॥ सुनिप्रभुवच
नविलोकिमुखगातहरषिहनुमंत ॥ चरनपरेउप्रेमाकुलत्राहित्राहिभगवंत ॥ ३२ ॥ चौ॥ वारवारप्रभुचहइउठावा ॥ प्रेममगनतेहिउ
ठवनभावा ॥ प्रभुकरपंकजकपिकरसीसा ॥ सुमिरिसोदसामगनगौरीसा ॥ सावधानमनकरिपुनिसंकर ॥ लागेकहनकथाअतिसु

हासा॥तवमधुवनभीतरिसवआए॥अंगदसमेतमधुफलषाए॥रषवारेजववरजैलागे॥मुष्टिप्रहाररहनतसवभागे॥दो॥जा
इपुकारेतेसवनिवनउजारिजुवराज॥सुनिसुग्रीवहरषिकपिकरिआएसवकाज॥२८॥चौ॥जौनहोतिसीतासुधिपाइ॥मधुवन
केफलसकहिनषाई॥एहिविधिमनविचारकरराजा॥आइगएकपिसहितसमाजा॥आइसवनिनावाएपदसीसा॥मिलेसवन्हि
अतिप्रेमकपीसा॥पूछीकुशलकुशलपददेषी॥रामकृपाभाकाजविशेषी॥नाथसोकाजकीन्हहनुमाना॥राषेसकलकपिन्ह
केप्राना॥सुनिसुग्रीववहुरितेहिमीलेउ॥कपिनसहितरघुपतिपहिचलेउ॥रामकपिन्हजवआवतदेषा॥कियेकाजमनहरषविशेषा
फटिकसिलावैठेदोउभाई॥परेसकलकपिचरनन्हजाई॥दो॥प्रीतिसहितसवभेटेरघुपतिकरुणापुंज॥पूछीकुशलनाथअवकुश
लदेषिपदकंज॥२९॥चौ॥जामवंतकहसुनुरघुराया॥जापरनाथकरहुतुमदाया॥ताहिसदासुभकुशलनिरंतर॥सुरनरसवप्रसन्न
ताऊपर॥सोईविजईविनईगुनसागर॥तासुसुजसतिहुंलोकउजागर॥प्रभुकीकृपाभएउसवकाज्ज॥जन्महमारसुफलभाआ
ज्ज॥नाथपवनसुतकीन्हिजोकरनी॥सहसौमुखसोजाइनवरनी॥पवनतनयकेचरितसोहाए॥जामवंतरघुपतिहिसुना
ए॥सुनतकृपानिधिमनअतिभाए॥पुनिहनुमानहरषिउरलाए॥कहहुतातकेहिभांतिजानकी॥रहतिकरतिरछाप्रानकी॥
दो॥नामपाहरूदिवसनिसिध्याननुह्मारकपाट॥लोचननिजपदजंत्रकाप्रानजाहिकेहिवाट॥३०॥चौ॥चलतमोहिचूडामनि

वरनैपारा॥गर्जहिवानरभालुअपारा॥नषआयुधगिरिपादपधारी॥चलेगगनमहिइछाचारी॥केहरिनादभालुकपिकरही॥डगमगा
हिदिग्गीचीकरही॥छं॥चीकरहिदिग्गजडोअमहिगिरिकोलसागरषरभरे॥मनहरषदिनकरसोमसुरमुनिनागकिंन्नरदुखटरे॥कटकु
टहिमर्कटविकटभटबहुकोटिकोटिन्हधावही॥जयरामप्रबलप्रतापकोसलनाथगुनगनगावही॥सहिसकैनभारउदारअहिपति
वारवारहिमोहई॥गहिदसनपुनिपुनिकमठपृष्ठकठोरसोकिमिसोहई॥रघुवीररुचिरप्रयानप्रस्थितिजानिपरमसुहावनी॥जनुक
मठषर्परसर्पराजसोलिषतअविचलपावनी॥दो॥एहिविधिजाइकृपानिधिउतरेसागरतीर॥जहंतहंलागेषानफलभालुविपुलकपि
वीर॥३५॥चौ॥उहांनिसाचररहइससंका॥जवतेजारिगएउकपिलंका॥निजनिजग्रहसवकरहिविचारा॥नहिनिसिचरकुलकेरउवा
रा॥जासुदूतवलवरनिनजाइ॥तेहिआयेपुरकवनिभलाई॥दूतन्हसनसुनिपुरजनवानी॥मंदोदरीअधिकअकुलानी॥रहसि
जोरिकरपतिपदलागी॥वोलीवचननीतरसपागी॥कंतकरषहरिसनपरिहरहू॥मोरकहाअतिहितहियधरहू॥समुझतजाहिदूतक
इकरनी॥स्रवहिगर्भरजनीचरघरनी॥तासुनारिनिजसचिववोलाई॥पठवहुकंतजोचहहुभलाई॥तवकुलकमलविपिनदुख
दाइ॥सीतासीतनिसासमआइ॥सुनहुनाथसीताविनुदीन्हे॥हितनतुम्हारसंभुअजकीन्हे॥दो॥रामवानअहिगनसरिसनिकरनि
साचरभेक॥जवलगिग्रसतनतवलगिजतनकरहुतजिटेक॥३६॥चौ॥स्रवनसुनीसठताकीवानी॥विहसाजगतविदितअभिमा

रर॥ कपिउठाइ प्रभु हृदय लगावा॥ कर गहि परम निकट बैठावा॥ कहु कपि रावन पालित लंका॥ केहि विधि दहेउ दुर्ग अति वंका॥ प्रभु प्रसन्न
जाना हनुमाना॥ बोला वचन विगत अभिमाना॥ साखामृग कै वडि प्रभुताई॥ साखा तें साखा पर जाई॥ नाघि सिंधु हाटकपुर जारा॥ निसि
चरगन वधि विपिन उजारा॥ सो सव तव प्रसाद रघुराई॥ नाथ न कछु मोरि प्रभुताई॥ दो॥ ता कह प्रभु कछु अगम नहि जा पर तुम अनु
कूल॥ तव प्रताप वडवानलहि जारि सकै खलु तूल॥ ३३॥ चौ॥ नाथ भगति तव अति सुखदायनी॥ देहु कृपा करि मुनि मन भाएनी॥ सुनि
प्रभु सरल प्रनत कपि वानी॥ एवमस्तु तव कहेउ भवानी॥ उमा राम सुभाव जेहि जाना॥ ताहि भजन तजि भाव न आना॥ यह संवाद
जासु उर आवा॥ रघुपति चरन भगति सो पावा॥ सुनि प्रभु वचन कहहि कपि वृंदा॥ जय जय जय कृपाल सुखकंदा॥ तव रघुपति कपिपतिहि वो
लावा॥ कहा चलै कर करहु वनावा॥ अव विलंव केहि कारन कीजै॥ तुरत कपिन्ह कहं आयसु दीजै॥ कौतुक देषि सुमन वहु वरषी॥ न
भ तें भवन चले सुर हरषी॥ दो॥ कपिपति वेगि वोलाए आये यूथप जूथ॥ नाना वरन अतुल वल वानर भालु वरूथ॥ ३४॥ चौ॥ प्रभु पद पंक
ज नावहि सीसा॥ गर्जहि भालु महावल कीसा॥ देषी राम सकल कपि सैना॥ चितइ कृपा करि राजिव नैना॥ राम कृपा वल पाइ कपींदा॥ भए
पछ जुत मनहुं गिरींदा॥ हरषि राम तव कीन्ह पयाना॥ सगुन भए सुंदर सुभ नाना॥ जासु सकल मंगलमय कीती॥ तासु पयान सगुन यह नी
ती॥ प्रभु पयान जाना वैदेही॥ फरकि वाम अंग कहि देही॥ जोइ जोइ सगुन जानकीहि होई॥ असगुन भये उ रावनहि सोई॥ चला कटक को

तुहेतु सनेही॥ मरन नगए प्रभु ताहि न त्यागा॥ विश्वद्रोह कृत अघ जेहि लागा॥ जासु नाम भव ताप निवारन॥ सोई प्रभु प्रगट समुझि जिय रा
वन॥ दो॥ वार वार पद लागौं विनय करौं दससीस॥ परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलधीस॥ ३९॥ दो॥ मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन
कहि पठइ यह वात॥ तुरत सो मै प्रभु सन कही पाइ सुअवसर तात॥ चौ॥ मालिवंत अति सचिव सयाना॥ तासु वचन सुनि अति सुख माना॥ तात अ
नुज तव नीति विभूषन॥ सो उर धरहु जो कहत विभीषन॥ रिपु उतकरष कहत सठ दोउ॥ दूरि न करहु इहा कै कोउ॥ मालिवंत गृह गएउ वहोरी
कहइ विभीषन दूइ कर जोरी॥ सुमति कुमति सव के उर रहई॥ नाथ पुरान निगम अस कहई॥ जहा सुमति तहा संपति नाना॥ जहा कुमति तहा
विपति निदाना॥ तव उर कुमति वसी विपरीता॥ हित अनहित मानहु रिपु प्रीता॥ काल राति निसिचर कुल केरी॥ तेहि सीता पर प्रीति घ
नेरी॥ दो॥ तात चरन गहि मागौं राषहु मोर दुलार॥ सीता देहु राम कहं अहित न होइ तुम्हार॥ ४०॥ चौ॥ वुध पुरान श्रुति संवत वानी॥ क
हि विभीषन नीति वषानी॥ सुनत दसानन उठा रिसाइ॥ खल तोहि निकट मृत्यु अव आई॥ जियसि सदा सठ मोर जिआवा॥ रिपु कर पच्छ
मूढ़ तोहि भावा॥ कहसि न खल अस को जग माही॥ भुज वल जाहि जीता मै नाही॥ मम पुर वसि तपसीन सन प्रीती॥ सठ मिलु जाइ तिन्हहि
कहु नीती॥ अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा॥ अनुज गहे पद वारहि वारा॥ उमा संत कै इहइ वडाई॥ मंद करैं तु जो करै भलाई॥ तुम पितु सरिस
भलेहि मोहि मारा॥ राम भजें हित नाथ तुम्हारा॥ सचिव संग ले नभ पथ गएउ॥ सवहि सुनाइ कहत अस भयउ॥ दो॥ राम सत्य संकल्प प्रभु सभा

नी॥सभयसुभावनारिकरसाचा॥मंगलमहंभयमनअतिकाचा॥जोआवैमर्कटकटकाई॥जियहिविचारेनिसिचरषाई॥कंपहि
लोकप्रजाकीत्रासा॥तासुनारिसुभीतवडिहासा॥असकहिविहसितासुउरलाई॥चलेउसभाममताअधिकाई॥मंदोदरीहृदैयकरिचिं
ता॥भएउकंतपरविधिविपरीता॥वैठेसभाषवरिअसिपाई॥सिंधुतीरसेनासवआई॥वूझेसिसचिवउचितमतकहहू॥तेसवहसेमष्ट
करिरहहू॥जितेहुसुरासुरतवस्त्रमनाही॥नरवानरकहिलेषेमाही॥दो॥सचिववैदगुरुतीनिजोप्रियवोलहिभैआस॥राजधर्मतन
तीनिकरहोइवेगिहिनास॥३७॥चौ॥सोइरावनकहसवइसहाई॥अस्तुतिकरहिसुनाइसुनाइ॥अवसरजानिविभीषनुआवा॥भ्राता
चरनसीसतिन्हनावा॥पुनिसिरुनाइवैठनिजआसनु॥वोलावचनपाइअनुसासन॥जोक्रपालपूछिहुमोहिवाता॥मतिअनुरूपकहो
हिततात॥जोचाहियआपनकल्याना॥सुजससुमतिसुभगतिसुखनाना॥सोपरनारिलिलारगोसांई॥तजोचौथकेचंदकिनाइ॥चौदहभव
नएकपतिहोइ॥भूतद्रोहतिष्टैनहिसोइ॥गुनसागरनागरनरजोऊ॥अलपलोभभलकहइनकोऊ॥दो॥कामक्रोधमदलोभसवनाथ
नरककेपंथ॥सवपरिहरिरघुवीरहीभजहुभजहिजेहिसंत॥३८॥चौ॥तातरामनहिनरभूपाला॥भुवनेश्वरकालहुकरकाला॥ब्रह्मअ
नामयअजभगवंता॥व्यापकअजितअनादिअनंता॥गोद्विजधेनुदेवहितकारी॥क्रपासिंधमानुषतनुधारी॥जनरंजनभंजनष
लव्राता॥वेदधर्मरछकसुनुभ्राता॥ताहिवयरतजिनाइयमाथा॥प्रनतारतिभंजनरघुनाथा॥देहुनाथप्रभुकहवैदेही॥भजहुरामवि

सुंदर॰ ११ ई॥ जो पै दुष्ट हृदैय सोइ होइ॥ मोरे सन्मुख आव कि सोई॥ निर्मल मन जन सो मोहि पावा॥ मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥ भेद लेन पठवा द
ससीसा॥ तव कछु न कछु तव हानि कपीसा॥ जग महं सखा निसाचर जेते॥ लछिमनु हनै निमिष महुं तेते॥ जौ सभीत आवा सरनाई रखि
हौं ताहि प्रान की नाईं॥ दो॥ उभय भांति तेहि आनहु हंसि कहि कृपानिकेत॥ जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनुम समेत॥४४॥ चौ॥ सा
दर तेहि आगें करि बानर॥ चले जहां रघुपति करुणाकर॥ दूरिहि ते देषे दोउ भ्राता॥ नैनानंद दान के दाता॥ बहुरि राम छविधाम विलोकी॥
रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी॥ भुज प्रलंब कंजारुण लोचन॥ स्यामल गात प्रनत भय मोचन॥ सिंह कंध आयत उर सोहा॥ आनन अ
मित मदन छबि मोहा॥ नयन नीर पुलकित अति गाता॥ मन धरि धीर कही मृदु बाता॥ नाथ दशानन कैं मैं भ्राता॥ निसिचर वंस जन्म सुरत्रा
ता॥ सहज पापप्रिय तामस देहा॥ यथा उलूकहि तम पर नेहा॥ दो॥ श्रवन सुजस सुनि आएउं प्रभु भंजन भव भीर॥ त्राहि त्राहि आरति हरन
सरन सुखद रघुवीर॥४५॥ चौ॥ अस कहि करत दंडवत देषा॥ तुरत उठे प्रभु हरष विशेषा॥ दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा॥ भुज विशाल राम ११
गहि हृदय लगावा॥ अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी॥ बोले वचन भगत भय हारी॥ कहु लंकेस सहित परिवारा॥ कुशल कुठाहर वास तु
म्हारा॥ षलमंडली वसहु दिन राती॥ सखा धर्म निबहै केहि भांती॥ मैं जानौ तुम्हारि सब रीती॥ अति नय निपुन न भाव अनीती॥ बरु भल वास
नरक कर ताता॥ दुष्ट संग जनि देइ विधाता॥ अब पद देषि कुशल रघुराया॥ जौ तुम्ह कीन्ह जानि जन दाया॥ दो॥ तब लगि कुशल न जीव

कालवसितोरि॥ मैरघुवीरसरणअवजाउंदेहुजनिषोरि॥४१॥चौ॥असकहिचलाविभीषणजवही॥आयुहिहीनभएसुनितवही॥सा
धुअवज्ञातुरतभवानी॥करकल्यानअखिलकैहानी॥रावनजवहीविभीषनुत्यागा॥भएउविभवविनुतवहिअभागा॥चलेउह
रषिरघुनायकपाही॥करतमनोरथवहुमनमाही॥देषिहौजाइचरनजलजाता॥अरुनमृदुलसेवकसुखदाता॥जेपदप
रसितरीरिषिनारी॥दंडककाननपावनकारी॥जेपदजनकसुताउरलाए॥कपटकुरंगसंगधरधाए॥हरउरसरसरोजपदजेई॥अ
होभाग्यमैदेषिहौतेइ॥दो॥जिन्हपावनकेपादुकन्हिभरतरहेमनलाइ॥तेपदआजुविलोकिहोइन्हनैननअवजाइ॥४२॥चौ॥एहिवि
धिकरतसप्रेमविचारा॥आएउसपदिसिंधुएहिपारा॥कपिन्हविभीषनुआवतदेषा॥जानाकोउरिपुदूतविशेषा॥ताहिराषिकपीसपहि
आए॥समाचारसवताहिसुनाए॥कहसुग्रीवसुनहुरघुराई॥आवामिलनदशाननभाई॥कहप्रभुसखावूझिएकाहा॥कहैकपीससु
नहुनरनाहा॥जानिनजाइनिसाचरमाया॥कामरूपकेहिकारनआया॥भेदहमारलेनसठआवा॥राषियवाधिमोहिअसभावा
सखीनीतितुमनीकिविचारी॥ममपरसरनागतभयहारी॥सुनिप्रभुवचनहरषहनुमाना॥सरनागतवछलभगवाना॥दो॥सरनाग
तकहयेतजहिनिजअनहितअनुमानि॥तेनरपावरपापमयतिन्हहिविलोकतहानि॥४३॥चौ॥कोटिविप्रवधलागहिजासु॥आएसर
नतजौनहितासु॥सन्मुखहोइजीवमोहिजवही॥जन्मकोटिअघनासहितवही॥पापवंतकरसहजसुभाउ॥भजनमोरितेहिभावनका

सुंदर० १२ मोरे॥ रामवचनसुनिवानरजूथा॥ सकलकहहिजयक्रपावरूथा॥ सुनतविभीषनप्रभुकेवानी॥ नहिअघातश्रवनाम्रतजानी॥ पदअं
१२ वुजगहिवारहिवारा॥ हृदयसमातनप्रेमअपारा॥ सुनहुदेवसचराचरस्वामी॥ प्रनतपालउरअंतरजामी॥ उरकछुप्रथमवासनारही
प्रभुपदप्रीतिसरितसोवही॥ अवक्रपालनिजभगतिपावनी॥ देहुक्रपाकरिशिवमनभावनी॥ एवमस्तुकहिप्रभुरनधीरा॥ मागातुर
तसिंधुकरनीरा॥ जदपिसखातवइछानाही॥ मोरदरसअमोघजगमाही॥ असकहिरामतिलकतेहिसारा॥ सुमनव्रष्टिनभभइअ
पारा॥ दो॥ रावनक्रोधअनलनिजस्वाससमीरप्रचंड॥ जरतविभीषणराषेउदीन्हेउराजअषंड॥ जोसंपतिशिवरावनहिदीन्हिदि
येदशमाथ॥ सोइसंपदाविभीषनहिसकुचिदीन्हिरघुनाथ॥ ४९॥ चौ॥ असप्रभुछाडिभजहिजेआना॥ तेनरपसुविनुपूछविषा
ना॥ निजजनजानिताहिअपनावा॥ प्रभुसुभावकपिकुलमनभावा॥ पुनिसर्वज्ञसर्वउरवासी॥ सर्वरूपसवरहितउदासी॥ वो
लेवचननीतिप्रतिपालक॥ कारनमनुजदनुजकुलघालक॥ सुनुकपीसलंकापतिवीरा॥ केहिविधितरियजलधिगंभीरा॥ संकुल राम
मकरउरगझषजाती॥ अतिअगाधदुस्तरसवभांती॥ कहलंकेससुनहुरघुनायक॥ कोटिसिंधुसोषकतुअसायक॥ यद्यपितदपि १२
नीतिअसगाई॥ विनयकरियसागरसनजाई॥ दो॥ प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधिकहिहिउपाइविचारि॥ विनुप्रयाससागरतरि
हिसकलभालुकपिधारि॥ ५०॥ चौ॥ सखाकहीतुमनीकिउपाई॥ करियदइवजौहोइसहाई॥ मंत्रनयहलछिमनमनभावा॥ रामव

कहं सपनेहुं मन मन न विश्राम ॥ जब लगि भजत न राम कहु सोक धाम तजि काम ॥४६॥ चौ॥ तब लगि हृदय बसत षल नाना ॥ लोभ
मोह मछर मद माना ॥ जब लगि उर न बसत रघुनाथा ॥ धरे चाप सायक कटि भाथा ॥ ममता तरुण तमी अंधिआरी ॥ राग द्वेष उलू-
क सुखकारी ॥ तब लगि बसति जीव मन माही ॥ जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाही ॥ अब मै कुशल मिटे भय भारे ॥ देषि राम पद कमल तु-
म्हारे ॥ तुम कृपाल जा पर अनुकूला ॥ ताहि न व्याप त्रिविधि भव सूला ॥ मै निसिचर अति अधम सुभाउ ॥ सुभ आचरनु कीन्ह न-
हि काउ ॥ जासु रूप मुनि ध्यान न आवा ॥ ते प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा ॥ दो॥ अहो भाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ॥
देषेउ नैन विरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ॥४७॥ चौ॥ सुनहु सखा निज कहौ सुभाउ ॥ जान भुसुंडि संभु गिरिजाउ ॥ जौ नर होइ चराचर
द्रोही ॥ आवै सभय सरन तकि मोही ॥ तजि मद मोह कपट छल नाना ॥ करौ सद्य तेहि साधु समाना ॥ जननी जनक बंधु सुत दारा ॥ त-
नु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥ सब कै ममता ताग बटोरी ॥ मम पद मनहि बांध बर डोरी ॥ समदरसी इच्छा कछु नाही ॥ हरष शोक भय नहि म-
न माही ॥ अस सज्जन मम उर बस कैसे ॥ लोभी हृदय बसै धनु जैसे ॥ तुम सारषे संत प्रिय मोरे ॥ धरे देह नहि आन निहोरे ॥ दो॥ सगुन उपा-
सक परहित निरत नीति दृढ नेम ॥ ते नर प्रान समान मम जिन्ह के द्विज पद प्रेम ॥४८॥ चौ॥ सुनु लंकेश सकल गुन तोरे ॥ ताते तुम अतिसय प्रि-

सुंदर० १३

किभइभेटकिफिरिगएश्रवनसुजससुनिमोर॥कहसिनरिपुदलतेजवलवहुतचक्रितचितचोर॥५३॥चौ॥नाथकृपाकरिपूछेहुजैसे
मानहुंकहाक्रोधतजितैसे॥मिलाजाइजवअनुजतुम्हारा॥जाततहिरामतिलकतेहिसारा॥रावनदूतहमहिसुनिकाना॥कपिन्हवाधि
दीन्हेउँदुखनाना॥श्रवननासिकाकाटनलागे॥रामसपथदीन्हेहमत्यागे॥पूछेहुनाथरामकटकाई॥वदनकोटिशतसकहिनगाई॥ना
नावरनभालुकपिधारी॥विकटाननविसालभयकारी॥जेहिंपुरदहेउहतेउसुततोरा॥सकलकपिनमहुसोवलुथोरा॥अमितनागव
लविपुलविसाला॥देषियमानहुंकालकराला॥दो॥द्विविदमयंदनीलनलअंगदअरुविकटासि॥दधिमुखकेहरिकुमुदगवजामवंत
वलरासि॥५४॥चौ॥एकपिसवसुग्रीवसमाना॥इन्हसमकोटिन्हगनइनजाना॥रामकृपाअतुलितवलतिनही॥तृनसमानत्रैलोक
हिगनहि॥असमैश्रवनसुनादशकंधर॥पदुमअठारहजूथपवंदर॥नाथकटकमहसोकपिनाही॥जोनतुमहिजीतैरनमाही॥परम
क्रोधमीजहिसवहाथा॥आएसुपैनदेहिरघुनाथा॥सोषैसिंधसहितझषव्याला॥फोरहिनषधरिकुधरविसाला॥मर्दिमर्दिमिलवहि राम
दशसीसा॥ऐसेवचनकहहिसवकीसा॥गर्जहितर्जहिंसहजअसंका॥मानहुग्रसनचहतहहिलंका॥दो॥सहजसूरकपिभालुसवपुनि १३
सिरपरप्रभुराम॥रावनकालकोटिकहुंजीतिसकहिसंग्राम॥५५॥चौ॥रामतेजवलवुधिविपुलाई॥सेषसहसशतसकहिनगाई॥स
कसरएकसोषिशतसागर॥तवभ्रातहिपूछेउनवनागर॥तासुवचनसुनिसागरपाही॥मागतपंथकृपालमनमाही॥सुनतवचनविहसा

चनसुनिअतिदुखपावा॥नाथदैवकरकौनभरोसा॥सोषियसिंधकरियमनरोसा॥कादरमनकहएकअधारा॥दैवदैवआलसीपुकारा
सुनतविहसिवोलेरघुवीरा॥ऐसैकरवधरहुमनधीरा॥असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई॥सिंधुसमीपगएदोउभाई॥प्रथमप्रनामकीन्हसिरु
नाई॥वैठेपुनितटदर्भडसाई॥जवहिंविभीषनप्रभुपहिआए॥पाछेरावनदूतपठाए॥दो॥सकलचरिततिन्हदेषाधरेकपटकपिदेह॥प्रभुगुनह
दयेसराहततसरनागतपरस्नेह॥५१॥चौ॥प्रगटवषानहिरामसुभाउ॥अतिसप्रेमगाविसरिदुराउ॥रिपुकरदूतकपिन्हजवजाने॥सकलवांधिक
पीसपहिआने॥कहसुग्रीवसुनहुसववानर॥अंगभंगकरिपठवहुनिसिचर॥सुनिसुग्रीववचनसवधाए॥वाधिकटकचहुपासफिराए
वहुप्रकारमारनसवलागे॥दीनपुकारततदपिनत्यागे॥जोहमारहरनासाकाना॥तेहिकोशलाधीसकैआना॥सुनिलछिमनतवनिकट
वोलावा॥दयालागिहसितुरतछोडावा॥रावनकहदीन्हेहुयहपाती॥लछिमनवचनवाचुकुलघाती॥दो॥कहेहुमुखागरमूढसननममसंदे
सउदार॥सीतादेइमिलहुनतोआवाकालतुम्हार॥५२॥चौ॥तुरतनाईलछिमनपदमाथा॥चलेउदूतवरनतगुणगाथा॥कहतरामगुणले
काआए॥रावनचरनसीसतिन्हनाए॥विहसिदशाननपूछीवाता॥कहुसुकसारआपनीकुसलाता॥पुनिकहुषवरिविभीषणकेरी॥जा
सुमीचुआइअतिनेरी॥करतराजलंकाअवत्यागी॥होइहिजवकरकीटअभागी॥पुनिकहुभालुकीसकटकाइ॥कठिनकालप्रेरितचलि
आइ॥जिन्हकेजीवनकररषवारा॥भएउमृदुलचितसिंधुविचारा॥कहतपसिनकैवातवहोरी॥जिन्हकेहृदयत्रासअतिमोरी॥दोहरा॥

तारतसनज्ञानकहानी॥ अतिलोभीसनविरतिवषानी॥ क्रोधिहिसनकामिहिहरिकथा॥ ऊसरवीजवयेफलयथा॥ असकहि
रघुपतिचापचढावा॥ यहमतलछिमनकेकेमनभावा॥ संधानेउंहरिविसिषकराला॥ उठिउदधिउरअंतरज्वाला॥ मकरउरगझषगन
अकुलाने॥ जरतजंतुजलनिधिजवजाने॥ कनकथालभरिमनिगननाना॥ विप्ररूपआएतजिमाना॥ दो॥ काटेपैकेदलीफलैको
टिजतनकरसीच॥ विनयनमानषगेससुनुडांटेपैनवनीच॥ ५८॥ चौ॥ सभयसिंधगहिपदप्रभुकेरे॥ छमहुनाथसवऔगुनमेरे॥
गगनसमीरअनलजलधरनी॥ इन्हकैनाथसहजजडकरनी॥ तवप्रेरितमायाउपजाए॥ सष्टीहेतुसवग्रंथनिगाए॥ प्रभुआए
सुजेहिकहजसअहई॥ सोतेहिभांतिरहेसुखलहई॥ प्रभुभलकीन्हमोहिसिषदीन्ही॥ मरजादापुनितुह्मरीकीन्ही॥ ढोलगवारसूद्र
पसुनारी॥ सकलताडनाकीअधिकारी॥ प्रभुप्रतापमैजावसुखाही॥ उतरिहिकटकनमोहिवडाई॥ प्रभुअज्ञाअपेलस्रुतिगा
ई॥ करौसोवेगिजोतुमहीसोहाई॥ दो॥ सुनतवचनविनीतअतिकहकृपालमुसुकाइ॥ जेहिविधिउतरैकपिकटकतातसोक
हहुउपाइ॥ ५९॥ चौ॥ नाथनीलनलकपिदोउभाई॥ लरिकाइरिषिआसिषपाई॥ तिन्हकरपरसकियेगिरिभारे॥ तरिहहिजलधि
प्रतापतुह्मारे॥ मैपुनिउरधरिप्रभुप्रभुताई॥ करिहौवलअनुमानसहाई॥ एहिविधिनाथपयोधिवधाई॥ जेहियहसुजसलोकतिहुगा
ई॥ एहिसरममउतरइतटवासी॥ अहहुनाथखलअघनटरासी॥ सुनिकृपालसागरमनपीरा॥ तुरतहिहरैरामरनधीरा॥ दो

दृससीसा॥जौआसिमतिसहायकतकीसा॥सहजमीतुकइवचनहृदाइ॥सागरसनठानीमचलाई॥सचिवसचीतविभीषनुजाके॥वि(
जयविभूतिकहांजगताके॥सुनिखलवचनदूतहिरिसिवाढी॥समयविचारिपत्रिकाकाढी॥रामानुजदीन्हियहपाती॥नाथवचाइजुडावहु
छाती॥विहसिवामकरलीन्हिरावन॥सचिववोलिसठलागुवचावन॥दो॥वातन्हमनहिरिझाइसठजानिघालसिकुलषीस॥रामविरोध
नउवरसिसरनविस्नुअजईस॥दो॥कितजैमानच्यानइवप्रभुपदपंकजभृंग॥होहिकिरामसरानलवलकुलसहितपतंग॥५६॥चौ॥
सुनतसभैसनमुखमुसुकाई॥कहतदशाननसवन्हसुनाई॥भूमिपराकरगहतअकासा॥लघुतापसकरवागविलासा॥कहसुकनाथस
त्यसववानी॥समुझहुछाडिप्रकृतअभिमानी॥सुनहुवचनममपरिहरिक्रोधा॥नाथरामसनतजहुविरोधा॥अतिकोमलरघुवीरसुभा
उ॥जद्यपिअखिललोककरराउ॥मिलतकृपातुमपरप्रभुकरिहही॥उरअपराधनएकौधरिहही॥जनकसुतारघुनाथहिदीजै॥एतनाकहा
मोरप्रभुकीजै॥जवतेंहिकहादेनवैदेही॥चरनप्रहारकीन्हसठतेही॥नाइचरनसिरचलासोताही॥कृपासिंधरघुनायकजहां॥करिप्रनाम
निजकथासुनाई॥रामकृपाआपनगतिपाई॥रिषिअगस्तिकीश्रापभवानी॥राक्षसभएउरहामुनिज्ञानी॥वंदिरामपदवारहिवारा॥मुनिनि
जआश्रमुकहपगुधारा॥दो॥विनयनमानतजलधिजडगएतीनिदिनवीति॥वोलेरामसकोपतवभयविनुहोइनप्रीति॥५७॥चौ॥
लछिमनवानसरासनआनू॥सोषौवारिधिविसिषकृसानू॥सठसनविनयकुटिलसनप्रीती॥सहजकृपिनसनसुंदरनीति॥मम

सुंदर कांड ५

𑆱𑆶𑆁𑆢𑆫𑆑𑆳𑆁𑆝𑆳 𑇕

सुंदर० षिरामवलपौरुषभारी॥ हरषिपयोनिधिभएउसुखारी॥ सकलचरितकहिप्रभुहिसुनावा॥ चरनवंदिपाथोदिसिधावा॥ छं॥ निज॰
१५ भवनगवनेसिंधुश्रीरघुवीरयहमतभाएउ॥ यहचरितकलिमलहरनयथामतिदासतुलसीगायउ॥ सुखभवनसंसैसमनदमनविषादरघु
पतिगुनगना॥ तजिसकलआसभरोसगावहिसुनहिसंततसठमना॥ दो॥ सकलसुमंगलदायकरघुनायकगुनगान॥ सादरसुनहितेत
रहिभवसिंधुविनाजलजान॥ ६०॥ इतिश्रीरामचरित्रेमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेज्ञानसंपादिनिनामपंचमोसोपानःसमाप्त॥
संवत् १८३५ भाद्रपदसुक्लसप्तमी ७ शनिवारलिखितारामरत्नद्विजेनहंसदासवैष्णवपठनार्थं॥ ॥ ॥श्रीरामजीसहाय॥ ॥
राम॥ राम राम
राम॥ राम॥
राम॥ राम राम राम
राम॥ १५
रामरामरामरामरामरामरामरामराम रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम राम
रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायननमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ रामायनमः॥ श्रीराम